अल्लाह की राह में खर्च करने का फायदा

मुहम्मद अज़हर मदनी

हज़रत अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि रसूल (पैग़म्बर) हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः हर दिन सुबह को दो फरिश्ते नाज़िल होते हैं उनमें से एक (दुआ करते हुए) कहता है ऐ अल्लाह माल खर्च करने वाले को और ज़्यादा दे और दूसरा कहता है ऐ अल्लाह खर्च न करने वाले का माल तबाह कर दे। (सहीह मुस्लिम १०१०)

कुरआन ने अल्लाह की राह में माल खर्च करने को एक अत्यंत लाभदायक तिजारत क़रार दिया है और यह एक ऐसी तिजारत है जो किसी माध्यम के बगैर की जाती है। अल्लाह और उसके बन्दे के बीच की जाने वाली इस तिजारत में कोई घाटा नहीं है क्योंकि इस में किसी धोखा धड़ी की कोई आशंका नहीं है और न ही संधि टूटने का भय है बल्कि इस में भायदा ही भायदा है, इस तरह का लाभ दुनिया की किसी तिजारत में नहीं हो सकता और न इस तरह का लाभ दुनिया का बड़े से बड़ा मालदार दे सकता है क्योंकि यह तो बन्दे और उसके स्वामी के बीच का मामला है जो बड़ा ही दयालू और कृपालू है। कुरआन में अल्लाह तबारक व तआला ने फरमायाः '' जो लोग अल्लाह की किताब की तिलावत करते हैं और नमाज़ की पाबन्दी रखते हैं और जो कुछ हमने उनको दिया है उसमें से गुप्त तौर पर और एलानिया खर्च करते हैं वह ऐसी तिजारत के उम्मीदवार हैं जो कभी घाटा में न हो गी ताकि उनको उनकी उजरतें पूरी दे और उनको अपने फज़्ल से और ज़्यादा दे, बेशक वह बख़्शने वाला कद्रदान है'' (सूरे फातिर २९-३०)

कुरआन में दूसरी जगह फरमायाः ''और तुम जो कुछ भी अल्लाह की राह में खर्च करो गे अल्लाह उसका (पूरा पूरा) बदला देगा और वह सब से बेहतर रोज़ी देने वाला है''। (सूरे सबा-३१)

कुरआन में दूसरी जगह फरमायाः ''अल्लाह पर और उसके रसूल पर ईमान ले आओ और उस माल से खर्च करो जिसमें अल्लाह ने तुम्हें (दूसरों का) जांनशीन (उत्तराधिकारी) बनाया है पस तुम में से जो ईमान लाएं और खैरात करें उन्हें बहुत बड़ा सवाब मिलेगा''। (सूरे हदीद-७)

पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने विभिन्न अवसर पर अल्लाह की राह में माल खर्च करने का उपदेश दिया है। एक अवसर पर हज़रत बिलाल रज़ियल्लाहो अन्हो से कहाः बिलाल! खर्च करो और अर्श वाले (अल्लाह) की तरफ से किसी कमी का भय न करो। अल्लाह की राह में खर्च करने के बहुत से लाभ हैं इसके ज़रिये अल्लाह की गैबी मदद होती है, कब्र की तपिश को बुझाता है और अल्लाह की राह में खर्च करने वाला कयामत के दिन अल्लाह के अर्श की क्षांव में होगा इसलिये अल्लाह की राह में खर्च करने वाले को इस बात की चिंता और भय नहीं होना चाहिए कि खर्च करने से माल कम हो जाएगा।

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि सदक़ा माल में कमी नहीं करता बल्कि उसमें बढ़ोतरी होती है शर्त यह है कि खर्च करते वक़्त नियत में खोट न हो, दिखावा न हो नेकी की नियत से माल देकर वापस लेने का ख्याल न हो। अल्लाह तआला से दुआ है कि वह हमें अल्लाह की राह में खर्च करने और गरीबों एवं ज़रूरतमन्दों की मदद करने की क्षमता दे।

मासिक

इसलाहे समाज

जनवरी 2021 वर्ष 32 अंक 1

जुमादल ऊला 1442 हिजरी

संरक्षक

असग़र अ़ली 'सलफ़ी'

संपादक

एहसानुल् ह़क़

❑	वार्षिक राशि	100 रुपये
❑	प्रति कापी	10 रुपये
❑	टोटल पेज	28

सम्पर्क

मासिक इसलाहे समाज (हिन्दी)
4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद
दिल्ली-110006
फोन : 23273407 फ़ैक्स: 23246613
RNI No. 53452/90

मुद्रक एवं प्रकाशक मुहम्मद इरफान शाकिर ने मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द की ओर से भारत आफसेट 2035 क़ासिम जान स्ट्रीट, बल्लीमारान, दिल्ली-6 से छपवा कर अहले हदीस मंज़िल 4116, उर्दू बाज़ार, जामा मस्जिद दिल्ली-6 से प्रकाशित किया।

सम्पादक: एहसानुल् हक़

लेखक के विचारों से संस्था का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

इस अंक में

1. अल्लाह की राह में ख़र्च करने का... 2
2. हमारी स्थिति 4
3. मक़सद से ग़ाफ़िल नहीं होना चाहिए 6
4. सकारात्मक परिवर्तन.... 7
5. इस्लाम में नर्मी की अहमियत 9
6. ईमान (आस्था) का प्रशिक्षण 11
7. क़ब्र का अज़ाब 13
8. हम्द 15
9. पैग़म्बर स० की शिक्षाएं एवं उपदेश 17
10. एमानत की हिफाज़त 20
11. धर्म के मामले में कोई ज़ोर नहीं.. 22
12. वक़्त एक महान नेमत 24
13. अल्लाह हमारे कर्म को जानता है 26
14. अहले हदीस कम्पलैक्स (विज्ञापन) 28

ईमेल:-
Jaridahtarjuman@gmail.com
Jamiatahlehadeeshind@hotmail.com
अब 'इसलाहे समाज' इन्टरनेट पर भी उपलब्ध है
वेब साइट:- **www.ahlehadees.org**

हमारी स्थिति

मौलाना असगर अली इमाम महदी सलफी

हर परिवार और समाज में बीमार और तन्दुरूस्त दोनों तरह के लोग मिल जाते हैं। मालदारों के आस पास गरीबों का वजूद भी नज़र आता है और किसी न किसी शक्ल में गरीब मालदार के लिये रहमत साबित होता है। मालदार गरीब के लिये उपचार होता है अब अगर फर्ज़ करें कि किसी समाज में सब या अधिकतर लोग अत्यन्त दयनीय हालत में हों तो उनकी ज़रूरत कौन पूरी करेगा? इस वक्त हम देख रहे हैं कि कोरोना वायरस की आफत और मुसीबत के जमाने में एक बहुत बड़ी तादाद बहुत सी जगहों पर और विभिन्न समाजों में ऐसे बढ़ती चली जा रही है कि जिस की ज़रूरत पूरी करने वाला नज़र नहीं आ रहा है। जो कल खुद ही दूसरों और परिवार वालों की देख रेख और भरण पोषण कर रहे थे वह भी एक एक दाने व पानी के मोहताज हैं। दुनिया के अधिक तर देश और मालदार देशों अमरीका यूरोप और अरबद्वीप जैसे देशों में भी बेरोज़गारी और संसाधन के संकट पैदा होते जा रहे हैं और इन देशों से खाली हाथ लौटने वाले लाखों मजदूर एवं कार्यकर्ता अपने अपने देशों में वापस जाकर और ज्यादा मुसीबतों और परेशानियों का सबब बनते जा रहे हैं और महामारी ने जश्न का वातावरण पैदा करने के बजाए मुश्किलात को आश्चर्य चकित कर देने की हद तक बढ़ा दिया है। हमें सिर्फ एक गांव में दसियों ऐसे लोग और परिवार मिले जो दयनीय हालत में ज़िन्दगी गुज़ार रहे हैं। सरकार ने उनके लिये चन्द किलो अनाज का प्रबन्ध कर दिया है जो बहरहाल उनके लिये बहुत बड़ा सहारा है। जिन्दगी की आम जरूरतें कैसे पूरी होती हैं? अकहनीय है। शादी विवाह के कर्तव्य से निमटने के लिये कोई गरीब से गरीब इन्सान उठ खड़ा होता था तो समाज में मदद करने वाले मिल ही जाते थे मगर आज हर तरह के ज़रूरत मन्दों की इतनी भरमाड़ है कि आदमी सुन सुन कर परेशान है। बीमारों की एक पंक्ति है जो दिन ब दिन बढ़ती जा रही है। उनकी दवा एलाज के लाले पड़े हुए हैं। मदद करने वालों की किल्लत होती जा रही है और ज़रूरत मन्दों की तादाद बढ़ती जा रही है। बेरोज़गारी और चोरी चकारी जो नज़र आती थी अब उसमें बढ़ोतरी ही नहीं बल्कि महामारी की तरह फैल रही है। पहले साल भर में गिने चुने कुछ मुसाफिर ऐसे मिलते थे जिनको सफर की आवश्यकताएं दरकार होती थीं अब आए दिन उनकी तादाद बढ़ती जा रही है। कोरोना वायरस की असली आर्थिक व समाजी मार अभी पूरे तौर पर पड़ी नहीं है इससके बावजूद मदर्सों के अध्यापक और मस्जिदों के

इमाम रोटी को तरस्ते जा रहे हैं। पहले भी मदर्सों की माली हालत अच्छी नहीं थी मगर समाज और देश व समुदाय की बड़ी चीज़ थी कि कहीं न कहीं से आंख का पानी बेच कर या बाइज़्ज़त तरीके से उनकी मदद हो जाती थी मगर इस वक़्त हालात तेज़ी से बदल रहे हैं। कौन किस की मदद करे? कब तक करे? किस किस की मदद करे और कहां से करे? यह प्रश्न भयानक रूप ध ाारण करते जा रहे हैं।

पहले एक गम था कि हमारे बहुत से बच्चे शिक्षा एवं प्रशिक्षण से वंचित हैं स्वयं बर्बादी की राह पर लग रहे हैं और समाज के लिये बोझ बन रहे हैं। अब हालत यह है कि कोरोना वायरस ने तमाम बच्चों को ही शिक्षा से वंचित कर दिया है। मां बाप लाख उपाय और बचाव के बावजूद बच्चों को बुरी संगत से बचाने में नाकाम होते जा रहे हैं। ९९ प्रतिशत बच्चे और कभी कभार बच्चियां भी शिक्षा और प्रशिक्षण से वंचित होकर तरह तरह की समाजी बीमारियों का शिकार हो रही हैं। इस तरह हर मैदान और हर स्तर पर यह मुसीबत सामूहिक रूप धारण करता जा रहा है जिस के बाद दुनिया सुख नहीं शोक स्थल बनती जाएगी। अपनी अपनी स्थिति हो गी और हालात हमारे कन्ट्रोल और पकड़ से बाहर हो जाएंगे। उस वक़्त कोई उपाय कारगर नहीं होगा और पक्षतावा व नाकामी के अलावा कोई चारा नहीं होगा बल्कि हर क्षण और हर जगह तबाही व बर्बादी के वह दृश्य होंगे कि अल्लाह की पनाह। आज मदर्से यहां तक कि बड़े मुस्लिम संगठनों का हाल इतना खराब होता जा रहा है कि वह अपने वजूद को बाकी रखना भी मुश्किल समझने लगे हैं मगर यह कि जिन्होंने ज़कात व मालियात की मजबूत पलानिंग और व्यवस्था बना रखी है और जिन जमाअतों में स्थायी रूप से पगार और अन्दुरूनी ज़रूरत के लम्बे खार्च नहीं हैं और अक़ीदतमन्दों की तरफ से देने का सिलसिला जारी रहता है। इसके अलावा जितने भी संगठन हैं वह दयनीय हालात को पहुंचे हुए हैं और वह महज़ आलोचना के कुछ पाने वाले नहीं हैं। अल्लाह ही मददगार और वही हमारा सबसे अच्छा रक्षक है। ऐसे हालात में ज़रूरत है कि वक़्त गुज़र जाने और कन्ट्रोल से बाहर हो जाने से पूर्व, पहले ही चरण में अपने बच्चों की शिक्षा के लिये घरेलू और महल्ला स्तर पर ठोस व्यवस्था करें। जहां आन लाइन और अन्य माध्यम से शिक्षा हो रही है उसको प्रभावी बनाने में अध्यापकों और प्रबन्धकों के साथ मां बाप अपनी भरपूर भूमिका निभाएं बच्चों पर गहरी नज़र रखने के साथ मदर्सों, स्कूलों और अध्यापकों के अधि ाकारों की अदायगी का ख्याल रखें। एक दूसरे के मददगार, सच्चे शुभचिंतक और सलाहकार बनें। मोहताज होने से पहले आज ही अपनी संस्थाओं, संगठनों और मदर्सों की देखभाल करें। बड़ी तेज़ी से भुखमरी और बेरोज़गारी बढ़ती जा रही है इस सिलसिले में हर स्तर पर प्रयास और जागरूकता पैदा करें।

बैठे बेफिक्र क्या हो हमवतनो
उठो अहले वतन के दोस्त बनो

मक़सद से ग़ाफिल नहीं होना चाहिए

नौशाद अहमद

किसी चीज़ की खूबी बयान करने का एक आम सा चलन और रिवाज बन गया है, लेकिन जब तक वह खूबी व्यवहारिक तौर पर नजर न आए तो फिर उसको किसी के लिये आदर्श बनाना आसान नहीं होता, खूबी बयान करना जितना आसान है उसको व्यवहारिक रूप देना उतना ही मुशिकल है। आम तौर से लोग किसी चीज़ की खूबी बयान तो करते हैं लेकिन उसका धरातल पर वजूद नज़र नहीं आता। यही मामला धर्म का भी है, खूबी बयान करना एक अलग बात है और उस पर चल कर या अमल करके दूसरे के सामने पेश करना एक अलग कार्य है। इन्सान का कर्म ही यह दर्शाता है कि उसके कर्म का स्तर क्या है और उसके कर्मों से लोग किस हद तक प्रभावित हो रहे हैं।

आम तौर से यह कहा जाता है कि इस्लाम में तमाम समस्याओं का समाधान मौजूद है लेकिन सवाल यह है कि क्या हम दुनिया के सामने अपने कर्मों से वहीं इस्लाम पेश कर रहे हैं जो इस्लाम धर्म ने हमें बताया है। यह इस समय की एक ट्रेजडी है कि लोग किसी के निजी कर्म को भी उसके धर्म का हिस्सा समझने लगते हैं लेकिन जब ऐसा सोचने वालों के बारे में राय बनाई जाती है तो बेचैन हो जाते हैं।

किसी का हर कर्म उसके धर्म का हिस्सा नहीं हो सकता, कुछ कर्म वह अपने धर्म के अनुसार करता है तो कुछ कर्म अपने मन के अनुसार करता है लेकिन हमें उसके हर कर्म को उसके धर्म का हिस्सा नहीं समझना चाहिए। यह सोच हमें गलत फहमी अर्थात भ्रम की दिशा में ले जाती है।

हर इन्सान की ज़िन्दगी का एक नेक मकसद होना चाहिए और इस नेक मकसद को पाने के लिये हमें पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और सहाबा किराम के आदर्श को अपनाना हो गा। नबी के आदर्श पर चल कर ही हम दुनिया में सकारात्मक परिवर्तन कर सकते हैं और बेचैन दिलों को सुख और संतुष्टि दे सकते हैं, क्योंकि केवल बातों से पिरवर्तन नहीं लाया जा सकता इसके लिये अमल और कर्तव्य को निभाने की ज़रूरत है।

मुसलमानों के पास एक आदर्श कानून और सिद्धांत मौजूद है यह हर जमाने के हालात के अनुसार है, इस्लाम की तालीमात एक उददेशपूर्ण जीवन का गुण सिखाती हैं, समाज को एक सकारात्मक राह पर ले जाती हैं, इसलिये जरूरत इस बात की है कि हम इस्लाम की शिक्षाओं का गहराई से अध्ययन करें, उसके अनुसार अपना जीवन गुजारें, बे मकसद जिन्दगी न गुज़ारें, अपना अक़ीदा मजबूत करें, अपने मकसद से गाफिल न हों, हमारा हर कर्म इस्लाम की शिक्षाओं के अनुसार हो, कोई ऐसा कर्म न हो जिस से इस्लाम का गलत प्रतिनिधुत्व (नुमाइन्दगी) होती हो। इसके अलावा हम इस्लाम की शिक्षाओं को ज्यादा से ज़्यादा लोगों तक पहुंचाएं और अपना वक़्त बे मकसद कामों में न खर्च करें।

सकारात्मक परिवर्तन का आरंभ कहाँ से?

मौलाना अब्दुल मन्नान शिकरावी

जीवन में आशाओं और आरूजुओं की भरमाड़ होती है मिसाल के तौर पर काश मेरी हालत ऐसी हो जाती, समाज ऐसा हो जाता, समाज ऐसा बन जाता, दुनिया के हालात इस तरह हो जाते जबकि आशाओं के पूरे होने के लिये जिन बुनियादी सिद्धांतों की ज़रूरत होती है उसकी तरफ हमारा ध्यान कम ही जाता है बाकी हम दूसरों के बलबूतो पर परिवर्तन की आशा और इच्छा रखते हैं जब स्वयं को बदलने का समय आता है तो इसे नज़रअन्दाज़ कर देते हैं, कभी कभार इन्सान यह भी सोचता है कि दुनिया मेरी मर्जी और पसन्द के अनुसार हो जाए इस तरह की सोच कदापि दुरूस्त नहीं है और न ही इसके माध्यम से स्वस्थ्य परिवर्तन लाया जा सकता है।

हमें मौजूदा हालात में कुरआन व हदीस की रोशनी में अपने विचार को बदलने की ज़रूरत है और समाज को बदलने के लिये हमें स्वयं को बदलना पड़ेगा। जब आप स्वयं को बदलने में सफल हो जाएंगे तो पूरा समाज ही नहीं पूरी उम्मत निश्चित रूप से बदल जाएगी यानी उम्मत कुरआन व हदीस की तालीमात का पाबन्द बन जाए गी। कुरआन में इसी को इस तरह बयान किया गया है।

''किसी कौम की हालत अल्लाह तआला नहीं बदलता जब तक कि वह स्वयं इसे न बदलें जो उनके दिलों में है'' (सूरे रअ्द-११)

इंगलैण्ड के एक कब्रस्तान में एक पादरी की कब्र पर निम्न वाक्य लिखे हुए थे :

''जिस वक्त मैं एक कड़यल जवान था, मेरे ख्यालात और जजबात भी फलदायी होने के साथ आशाएं और आरूजूएं भी जवान थीं। उस समय मेरा सपना था कि मैं संसार का सुधार करूंगा और इसे बदल कर रख दूंगा जब बुद्धि प्रबल हुई और समझ बूझ में बढ़ोतरी हुई तो मुझे एहसास हुआ कि दुनिया मेरे सवभाव के अनुसार नहीं बदल सकती फिर मैंने ने संकल्प और ठान लिया कि मैं अपने पहले विचार से पलट जाऊंगा और केवल अपने शहर का सुधार करूंगा लेकिन बहुत ही कम मुददत में मैं इस परिणाम पर पहुंच गया कि यह भी एक असंभव मामला है। जब मेरी आयु और ज्यादा बढ़ी तो मैंने अंतिम प्रयास के तौर पर अपने रिश्ते नातेदारों के सुधार का बेड़ा उठाया लेकिन उस वक़्त मुझे एक सख्त झटका लगा जब मुझे यह एहसास हो गया कि मेरे रिश्ते नातेदारों में कोई बदलने के लिये तैयार नहीं है और अब जब कि मैं मौत से बहुत करीब हूं तो मुझे यह ख्याल आया कि अगर मैंने अपनी जात से सुधार और सकारात्मक परिवर्तन लाने की शुरूआत की होती और अपना पूरा ध्यान इसी पर लगाया होता तो अपने परिवार वालों के सुधार का रास्ता आसान हो जाता और वह मुझे अपने लिये आदर्श मान लेते फिर मैं अपने परिवार वालों की सहायता से अपने शहर के हालात को बेहतर कर देता और इस तरह दुनिया के सुधार का सामान उपलब्ध

ा करा देता''।

राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था जो परिवर्तन तुम दुनिया में देखने के इच्छुक हो इस परिवर्तन के सफर की शुरूआत स्वयं से करो।

कहा जाता है कि एक बादशाह था जो बहुत बड़े देश का मालिक था उसे एक बार लम्बे और कठिन सफर पर जाना पड़ा सफर से लौटते वक़्त ऊबड़ खाबड़ रास्ता होने के कारण उसके पैर सूज गये और छाले पड़ गये। बादशाह ने आदेश दिया कि तमाम सड़कों पर चमड़ा बिछा दिया जाए लेकिन बादशाह के एक सलाहकार ने कहा कि हर सड़क पर चमड़ा बिछाने के बजाए पैर के नीचे पहनने के लिये चमड़े के टुकड़े (जूते) का प्रयोग शुरू कर दिया जाए, यह ज़्यादा बेहतर होगा। इसका मतलब यह है कि समस्याओं का समाधान और परिवर्तन की शुरूआत छोटे स्तर पर करना चाहिए ताकि वर्तमान समस्या खतम हो जाए और आगे चल कर बहुत बड़ी तबदीली का आधार बन जाए। आप इसके लिए छोटे स्तर पर प्रयास करें बल्कि तबदीली की शुरूआत अपनी निजी जिन्दगी से करें जब हम अपने अन्दर सकारात्मक परिवर्तन लाने में सफल हो जाएंगे तो इसका पिरणाम धरातल पर भी नज़र आए गा। दूसरों पर आदेश चलाना, आलोचना करने और किसी तरह की पाबन्दी लगाने से पहले सुधार का काम अपने परिवार वालों से करें। आचरण और व्यवहार में दूसरों के लिये आदर्श बनें निसन्देह इस के अच्छे परिणाम आएंगे और इससे केवल आप को ही लाभ नहीं होगा बल्कि शुद्धबुद्धि रखने वाले को सीखने का अवसर मिलेगा और मानवता को एक सकारात्मक दिशा मिल जाएगी। सकारात्मक परिवर्तन के बारे में कुछ बातें ध्यान देने योग्य हैं।

१. अल्लाह से मदद और दुआ के माध्यम से शुरूआत करें क्योंकि वही तकदीर बनाने वाला है वह जो चाहता करता है और सब कुछ उसके हुक्म से होता है।

२. अल्लाह का ज़्यादा से ज़्यादा आज्ञापालन द्वारा अपने ईमान को मजबूत बनाएँ।

३. यह बात याद रखें कि अल्लाह हर शख्स को नेक काम की क्षमता देता है किसी को नमाज की, किसी को सदक़ा खैरात की, किसी को समझौता सुलह सफाई की क्षमता देता है। ४. तबदीली अन्दर से होती है इसके लिये ज़रूरी है कि मन में संतोष हो और संकल्प हो और परिणाम पा जाने का धुन हो तो परिणाम अच्छा ही निकल कर आता है।

५. नेक काम में देर नहीं करना चाहिए।

६. यह भी ध्यान रहे कि तबदीली चरणबद्ध तरीक़े से हो और सकारात्मक होने के साथ सच्ची और स्थायी हो जल्द बाज़ी में तात्कालिक लाभ की इच्छा करने से भायदे के बजाए नुकसान हो जाता है।

७. इस काम के लिये आयु की कोई सीमा नहीं है और अपनी क्षमता के अनुसार ही भार उठाना चाहिए।

८. यह भी याद रहे कि सकारात्मक और नेक काम में कठिनाई पैदा होती है और कठिनाई के बाद ही आसानी पैदा होती है।

एक बात हमारे ध्यान में रहना चाहिए कि कोई भी चीज़ असंभव नहीं है इसलिये निराशा को पास भी फटकने नहीं देना चाहिए।

इस्लाम में नर्मी की अहमियत

सईदुर्रहमान सनाबिली

कुरआन और हदीस में मुसलमानों को दूसरों और अपनों के साथ नर्मी से पेश आने का हुक्म और उपदेश दिया गया है। नर्मी को पसन्द किया जाता है और सख्ती को अप्रिय समझा जाता है इसी लिये अल्लाह तआला ने अपने प्यारे पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को नर्म स्वभाव वाला बनाया है। कुरआन में भी आप की प्रशंसा इन शब्दों में की गई है।

''अल्लाह की रहमत के सबब आप उन पर नर्म दिल हैं और अगर आप बदजुबान और सख्त दिल होते तो यह सब आप के पास से छट जाते।'' (सूरे आल इमरान १५९)

नर्मी दिलों को जोड़ती है, इसके अच्छे प्रभाव पड़ते हैं, नर्मी से लोग एक दूसरे से जुड़े रहते हैं और आपसी प्रेम भाव बढ़ता है जब कि सख्त स्वभाव रखने वाला समाज में अलग थलग पड़ जाता है।

अल्लाह नर्मी करने वाला है। आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला नर्मी करने वाला है और नर्मी को पसन्द करता है। (सहीह बुखारी ६९२७ सहीह मुस्लिम ४०२७)

जो शख्स नर्मी से वंचित है वह हर भलाई से वंचित (महरूम) होता है। जरीर बिन अब्दुल्लाह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को फरमाते हुए सुना कि जो शख्स नर्मी से महरूम (अर्थात जो नर्म दिल नहीं होता) वह हर भलाई से महरूम है।

नर्मी करने वाले पर नरक की आग हराम है। अब्दुल्लाह बिन मस्ऊद रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया क्या मैं तुम्हें उस शख्स के बारे में न बताऊं जिस पर आग हराम है। आग उस शख्स पर हराम है, जो लोगों के करीब हो उनसे नर्मी और आसानी का बर्ताव करो। (सुनन तिर्मिज़ी २४८८ अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह क़रार दिया है)

इस्लाम में लोगों को खुश रखने का उपदेश दिया गया है। अनस बिन मालिक रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि आसानी पैदा करो, मुश्किल न पैदा करो, लोगों को खुश रखो और उन्हें नाराज़ न करो। (सहीह बुखारी ६९ सहीह मुस्लिम १७३२)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो ''अलैहि वसल्लम ने फरमाया अल्लाह तआला जब किसी परिवार के साथ भलाई का एरादा करता है तो उनके अन्दर नर्मी की खूबी पैदा कर देता है''। (मुसनद अहमद २४४२७)

नर्मी की विशेषता चीज़ों और मामलात को खूबसूरत बना देती है। आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा

बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''बेशक नर्मी हर चीज़ को खूबसूरत बना देती है और जिस चीज़ से नर्मी को अलग कर दिया जाए तो वह ऐबदार हो जाती है''। (सहीह मुस्लिम १५९४)

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''अल्लाह नर्मी करने वाला है और नर्मी को पसन्द करता है और जो बदला नर्मी पर देता है वह सख्ती पर नहीं देता बल्कि इस के सिवा किसी चीज़ पर नहीं देता''। (सहीह बुखारी ६९२७ सहीह मुस्लिम २५९३)

लोगों से नर्मी से पेश आना, सख्त स्वभाव से बचना, लोगों को मआफ कर देना अत्यन्त सवाब का काम है। अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''मोमिन (मुसमलान) नर्म स्वभाव और आसानी पैदा करने वाले होते हैं, सिधाए हुए ऊंट की तरह जिसे बांधा दो तो बंध जाए और हांको तो चलने लगे और किसी चटटान पर बैठाओ तो आराम से बैठ जाए''।

(अज्जोहद, इब्ने मुबारक रह०, बैहकी, हिलयतुल औलिया, अलबानी ने इस हदीस को हसन लिगैरिहि करार दिया है)

इस्लाम ने सेवक के साथ नर्मी का बर्ताव करने का हुक्म दिया है। अबू हुरैरह रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया ''गुलाम (सेवक) को भले तरीक़े से खाना खिलाओ और भले तरीक़े से पहनाओ और उसे ऐसे ही काम पर लगाओ जो वह करने की ताकत रखता हो''। (सहीह मुस्लिम १६६२)

जानवरों की तक्लीफ दूर करना, उनकी आवश्यकताओं को पूरा करना, उनके आराम का ख्याल रखना, उनके मर्ज का एलाज करवाना, और ज़्यादा बोझ न डालना नर्मी की पहचान है। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस ऊंट की फरयाद भी सुनी जिसके मालिक ने बुढ़ापे में उसको बेचना चाहा और फरमाया कि इस ऊंट को यूं ही न छोड़ो। इसी तरह आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने उस कुतिया को बाहर निकालने से भी मना किया जिसने वहां बच्चे दे दिए थे। (इमताउल असमा, लेखकः मकरेज़ी रह० ३६६)

एक सहाबी ने चिड़िये के बच्चों को उसके घोंसले से निकाल लिया था, आप ने चिड़िये के दुख और बेचैनी को देख कर उसके बच्चे को घोंसले में रखने का हुक्म दिया (सुनन अबू दाऊद २६७६, अल्लामा अलबानी ने इस हदीस को सहीह करार दिया है।

नर्मी इन्सान को दया करूणा के लिये प्रेरित करती है, सख्ती और गुस्से को दूर करती है, सख्त दिली और कड़वाहट को नर्मी में बदल देती है और दूसरों से बदला लेने से रोकती है। नर्मी नेकी में बढ़ोतरी, और दाया व करूणा का माध्यम बन जाती है इसलिये दूसरों से प्रेम भाव से पेश आओ, नर्मी से मामलात आसान हो जाएंगे, लोग तुम्हारे लिये अच्छा सोचेंगे और दुआ देंगे जब कि सख्ती से लोग दूर होते चले जाएंगे।

❑ ❑ ❑

ईमान (आस्था) का प्रशिक्षण

डा० मुक्तदा हसन अज़हरी रह०

एक मुसलमान की सबसे बड़ी सम्पत्ति उसका ईमान (आस्था) है। इसी ईमान के कारण ही वह मुसलमान कहलाने का पात्र है तथा ईमान पर ही उसकी मुक्ति निर्भर है। अतः आवश्यक है कि बच्चे को प्रारम्भ से ही ईमान के नियम तथा शरीअत के स्तम्भों से परिचित कराया जाए।

जब बच्चा समझदार हो जाये तो उसे आस्था के नियमों की शिक्षा दी जाये तथा उसे बताया जाये कि मुसलमान होने के लिये अल्लाह तआला के अस्तित्व एवं उसकी विशेषताओं पर, रसूलों पर, फरिश्तों पर, आसमानी किताबों पर, कब्र के दण्ड पर, मरने के बाद पुनः जीवित होने पर, न्याय दिवस पर स्वर्ग तथा नरक पर, इसी प्रकार छिपी हुई अन्य वस्तुओं पर आस्था (विश्वास) रखना आवश्यक है।

इसी तरह उसे इस्लामी स्तम्भों में से नमाज़, रोज़ा, ज़कात तथा हज की शिक्षा दी जाये तथा साथ ही साथ शरीअत के व्यवहारिक तथा चारित्रिक आदेशों एवं नियमों की जानकारी दी जाये। हाकिम के एक कथन में है कि बच्चों को सर्वप्रथम लाइलाहाइल्लल्लाह (ईश्वर एक है) सिखाओ क्योंकि तौहीद (एकेश्वरवाद) का इस्लाम में अति महत्व है, तथा इसके बिना उपासना का महत्व नहीं, और न ही अल्लाह के यहां उसके व्यवहार का कोई मूल्य है।

इसके पश्चात बच्चों को हलाल -हराम (वैध-अवैध) की शिक्षा देनी चाहिए तथा अल्लाह तआला के बताए हुए मार्ग के अनुपालन का सुझाव देना चाहिए ताकि बच्चों को धार्मिक आदेशों की जानकारी हो तथा उसी के अनुसार जीवन व्यतीत करने की आदत डालें।

सात वर्ष की उम्र में बच्चे को नमाज़ का आदेश दिया जाये, यदि १० वर्ष की उम्र में नमाज़ न पढ़ें तो मारकर पढ़ाया जाये तथा उनका बिस्तर अलग कर दिया जाये।

प्रारम्भ से ही बच्चों को नबी सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम, उनके परिवार वालों तथा सहाबा किराम से प्रेम, लगाव एवं उनके सम्मान का पाठ पढ़ाना तथा कुरआन पढ़ने का पाबन्द बनाना चाहिए। इस्लामी इतिहास में भी उनकी रूचि उत्पन्न करना आवश्यक है कि उन्हें अनुमान हो सके कि किस प्रकार दीन धर्म उन तक पहुँचा तथा दूसरों तक पहुँचाने के लिए उन्हें क्या करना चाहिए। बच्चों के जीवन में कुरआन करीम का पढ़ना तथा याद करना एवं व्यवहार, शिष्टाचार के उपदेश के महत्व पर सभी मुस्लिम प्रशिक्षण विशेषज्ञों ने बल दिया है।

इस्लाम की व्याख्या से यह मालूम होता है कि प्रत्येक बच्चा स्वभाविक रूप से ईमान तथा एकेश्वरवाद सफाई एवं पवित्रता पर जन्म लेता है परन्तु जन्मोपरान्त घर तथा वातावरण से प्रभावित होकर कुमार्ग पर चलने लगता है।

बच्चे के जीवन में समाज तथा वातावरण के प्रभाव के इस महत्व के उपरान्त उन माता पिता को गम्भीरता पूर्वक विचार करना चाहिए जो अपने बच्चों को इस्लाम की

बुनियादी शिक्षा से पहले अन्य विद्यालयों में भेज देते हैं।

इस प्रकार माता पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चों को नास्तिक तथा अश्लील पुस्तकों तथा इस्लाम विरोधी दृष्टिकोण एवं आन्दोलनों से सुरक्षित रखें ताकि उनका ईमान बचा रहे तथा उनके हृदय में धर्म का सम्मान एवं प्रेम स्थापित रहे।

नैतिक प्रशिक्षण

इस विषय से अभिप्राय वह सभी अच्छे कार्य हैं जिसका मनुष्य के चरित्र तथा व्यवहार से सम्बन्ध है तथा जिसका आदेश दिया गया है। चरित्र का इस्लाम में अत्याधिक महत्व है तथा मानव समाज का सुधार एवं हित, चरित्र पर ही निर्भर है। इसी शक्ति से मनुष्य एक दूसरे को प्रभावित करता है तथा जीवन को सुखमय बनाता है।

यदि मनुष्य के हृदय में ईमान की रोशनी तथा ईश्वर का भय है तो अवश्य ही उसका कार्य अच्छा और व्यवहार एवं चरित्र श्रेष्ठ होगा। चरित्र के महत्व को दृष्टिगत रखते हुए इस्लाम ने चिरत्र के प्रशिक्षण पर अधिक बल दिाय है तथा दया एवं दान का सुझाव दिया है।

तिर्मिज़ी की एक हदीस में नबी सल्ल्लाहो अलैहि वसल्लम का कथन है कि एक पिता का अपने पुत्र के लिए सबसे उत्तम उपहार, शिष्टाचार तथा अच्छा चरित्र एवं अच्छा व्यवहार है। नैतिक प्रशिक्षण के विषय में माता-पिता तथा अभिभावकों की महत्वपूर्ण भूमिका है। शरीअत (ध र्म) की शिक्षाओं से मालूम होता है कि सन्तान के विषय में माता पिता तथा अभिभावकों को निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है।

प्रारम्भ से ही बच्चों को सच्चाई, त्याग, बलिदान, दृढ़ता, बड़ों का सम्मान तथा दूसरों के साथ दया एवं कृपा भाव तथा कुशल व्यवहार का साधक बनाना चाहिए तथा सभी उन अच्छे कार्यों के करने का सुझाव दिया जाये जिससे दूसरों को सुख सुविधा प्राप्त हो।

इसी प्रकार बच्चों को निम्नलिखित चारित्रिक दोषों से दूर रखने का भरपूर प्रयास किया जाये।

झूठ : मुनष्य के स्वभाव के विपरीत तथा अत्याधिक बुरी आदत झूठ बोलना है। शरीअत ने इस सम्बन्ध में कड़ी चेतावनी दी है। झूठ एक प्रकार से झगड़े की जड़ है तथा इसकी गणना झगड़े की आदतों में की जाती है। झूठे व्यक्ति के विषय में हदीस में वर्णित है कि अल्लाह तआला कयामत (प्रलय) के दिन झूठे व्यक्ति से न तो बात करेगा न उसे मुक्ति प्रदान करेगा और न ही उसकी ओर देखेगा झूटे को बड़ी भयंकर यातना दी जायेगी।

सन्तान को इस बुरी आदत अर्थात झूठ के अति भयावह परिणामों से भली भांति सचेत कर देना चाहिए तथा उससे होने वाली हानियों की सविस्तार व्याख्या कर देनी चाहिए। इसी प्रकार यह भी आवश्यक है कि माता पिता तथा अभिभावक बच्चों से झूठ न बोलें ताकि उनकी सन्तान झूठ से दूर रहे।

चोरीः चोरी करना अत्याधिक बुरी आदतों में से एक है तथा अच्छे चरित्र के विपरीत कार्य है। इससे मनुष्य में अन्य चारित्रिक दोष उत्पन्न होते हैं तथा इससे समाज को हानि उठाना पड़ता है। चोरी की बुरी आदतों से सन्तान को बचाना तथा दूर रखना अतिआवश्यक है। उनके दिल में अल्लाह का भय उत्पन्न किया जाये, तथा मनुष्य की सम्पत्ति एवं धन दौलत का आदर स्पष्ट किया जाये और चोरी के भयंकर परिणामों को बता कर बच्चों के मन में चोरी से घृणा उत्पन्न की जाये।

क़ब्र का अज़ाब

मौलाना मुख्तार अहमद मदनी

इस्लाम में कुछ ऐसे बुनियादी अक़ीदे हैं जिन में शक या सन्देह करना इस्लाम के विपरीत है, इन ही अक़ीदों में से एक अकीदा (आस्था) कब्र का अज़ाब भी है कुरआन करीम में क़ब्र के अज़ाब का उल्लेख किया गया है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''और आले फिरऔन पर बुरी तरह का अज़ाब उलट पड़ा, यह हर सुबह व शाम आग के सामने लाए जाते हैं और जिस दिन क्यामत होगी। (फरमान हो गा) कि आले फिरऔन को सख्त तरीन अज़ाब में डालो'' (सूरे ग़ाफिर)

इस आयत से मालूम हुआ कि फिरऔन और उसकी कौम को सुबह व शाम जो अज़ाब होता है क्यामत से पहले का है और क्यामत से पहले कब्र का ही अज़ाब होता है। अर्थात उन्हें कब्र में अज़ाब होता है, क्यामत के दिन उन्हें कब्र से निकाल कर सख्त तरीन अज़ाब यानी नरक में डाल दिया जाएगा।

आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम मेरे पास आए उस वक़्त मेरे पास एक यहूदी औरत बैठी हुई थी और कह रही थी कि तुम लोग कब्र में आजमाए जाओ गे नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने जब यह बात सुनी तो घबरा गये और फरमाया यहूदी आज़माए जांगे। आइशा रज़ियल्लाहो तआला अन्हा फरमाती हैं कि इस के बाद हम कई रात वह्य का इन्तेज़ार करते रहे। एक दिन पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि मेरी तरफ वह्य (प्रकाशना) की गयी है कि तुम लोग कबरों में आजमाए जाओगे। आइशा रज़ियल्लाहो अन्हा फरमाती हैं कि इसके बाद मैंने आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को हमेशा कब्र के अज़ाब से पनाह मांगते सुना। (सहीह मुस्लिम)

अबू ऐयूब रज़ियल्लाहो फरमाते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सूरज डूबने के बाद निकले, एक आवाज़ सुनी तो फरमाया कि यहूदियों को उनकी कबरों में अज़ाब हो रहा है। (सहीह मुस्लिम)

पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अगर यह बात न होती कि तुम मुर्दों को दफन न करो गे तो मैं अल्लाह से दुआ करता कि कब्र में होने वाले अज़ाब को तुम्हें भी सुना दे जो मैं सुनता हूं फिर आप ने फरमाया जहन्नम के अज़ाब से अल्लाह की पनाह मांगो। सहाबा किराम रज़ियल्लाहो अन्हुम ने कहा हम कब्र के अज़ाब से अल्लाह की पनाह चाहते हैं। (सहीह मुस्लिम २८५७)

एक बार पैगम्बर हजरत महम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का कब्रों के पास से गुज़र हुआ तो आप ने फरमाया इन दोनों को अज़ाब हो रहा है। लेकिन किसी बड़े पाप की वजह से नहीं, इनमें से एक चुगली करता था और दूसरा पेशाब के छींटों से नहीं बचता था। (बुखारी मुस्लिम) नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने में एक घटना हुई जिसे मदीना के वासियों ने देखा।

अनस रज़ियल्लाहो अन्हो बयान करते हैं, एक नसरानी (मुसलमान) हो गया उसने सूरे बकरा और सूरे आल इमरान पढ़ ली और वह्य लिखने लगा। बाद में इस्लाम से फिर गया। कहने लगा कि मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को तो किसी बात का पता ही नहीं है, जो कुछ मैं लिख कर देता हूं बस वही कह देता है जब उसकी मौत हुई तो नसरानियों ने उसको दफन कर दिया। जब सुबह हुई तो लोगों ने देखा कि उसकी लाश को जमीन ने बाहर फैंक दिया है नसरानियों ने आरोप लगाया कि यह मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम और उनके साथियों का प्रतिशोध है क्योंकि उसने उनके दीन को छोड़ दिया था नसरानियों ने दोबारा कब्र खोद कर दफन किया फिर जमीन ने लाश को बाहर फैंक दिया, फिर नसरानियों ने मुहम्मद और उनके साथियों पर आरोप लगाया नसरानियों ने गहरी कब्र खोद कर दफन किया फिर जमीन ने लाश को बाहर फैंक दिया इसके बाद नसरानियों को विश्वास हो गया कि यह अल्लाह का अज़ाब है इसके बाद नसरानियों ने उसकी लाश को ऐसे ही बाहर छोड़ दिया। (सहीह बुखारी)

एलाने दाख़िला

(मदारिस से फ़ारिग़ तलबा के लिए)

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द के जेरे एहतमाम अहले हदीस कम्पलैक्स ओखला नई दिल्ली में स्थापित उच्च शैक्षिक एवं प्रशिक्षण संस्था अलमाहदुल आली लित तख़स्सुस फ़िद दिरासातिल इस्लामी में नये तालीमी कलैण्डर के अनुसार इस साल नये सत्र के लिये एडमीशन जारी है। अपना अनुरोध पत्र व सनद की फोटो कापी इस पते पर भेजें। और दाख़िला इमतिहान की तारीख़ का इन्तेज़ार करें।

अधिकृत जानकारी के लिये संपर्क करें।

अहले हदीस कम्पलैक्स डी.254 अबुल फजल इन्कलेव
जामिया नगर, ओखला, नई दिल्ली-110025
फोन 011-26946205 , 011-23273407
Mob. 9213172981, 09560841844

शिक्षा एवं प्रशिक्षण विभाग

मर्कज़ी जमीअत अहले हदीस हिन्द

सालिक बस्तवी

तेरी कुदरत हसीं चांद तारों में है
कोह में दश्त में आबशारों में है
सब्ज पत्तों में फूलों में ख़ारों में है
बाग़ हस्ती के रंगी नज़ारों में है
तेरी अज़मत की तनवीर है चार सू
कह रही है हर इक चीज़ अल्लाह हू

जात तेरी निराली है ऐ जुल मिनन
तेरी कुदरत पे कुर्बां है चरखे कुहन
तेरी ख़ुश्बू गुलिस्तां में है नग़मा ज़न
लायक़े हम्द हैं बादशाहे ज़मन
तेरी अज़मत की तनवीर है चार सू
कह रही है हर इक चीज़ अल्लाह हू

मेरे मौला तू दुनिया का मुख्तार है
हुक्म पे तेरे कुर्बान संसार है
तेरा फज़्लो करम मुझ को दरकार है
तेरा दर्बार आली गुहर बार है
तेरी अज़मत की तनवीर है चार सू
कह रही है हर इक चीज़ अल्लाह हू

मेरे मन में बसा दे जमाले हरम
क्या बनाएं गे यह पत्थरों के सनम

काबिले कद्र है तेरा जाहो हशम
दूर कर दे कलेजे से दर्द व अलम
तेरी अज़मत की तनवीर है चार सू
कह रही है हर इक चीज़ अल्लाह हू
क़लबे सालिक है शैदाए खैरूल बशर
जान देता है हुसने अहादीस पर
यह दुआ मेरी है इसको मनजूर कर
मुझ पर होती रहे तेरी हर दम नज़र
तेरी अज़मत की तनवीर है चार सू
कह रही है हर इक चीज़ अल्लाह हू

पाठक गण ध्यान दें

1-जल्द से जल्द बकाया राशि भेज दें। 2-अगर आपको हर महीने की 5 तारीख को पत्रिका न मिले तो इसके बारे में कार्यालय को सूचित करें। न मिलने की सूरत में दूसरी कापी भेजी जायेगी, लेकिन शिकायत करने से पहले अपने नजदीकी डाकखाने पर जानकारी हासिल कर लें। 3-नये खरीदारों से अनुरोध है कि अपने पते में फोन नम्बर अथवा मोबाइल नम्बर और पिन कोड भी लिखें। 4-पुराने खरीदारों से अपील की जाती है कि यदि उनका कोई फोन नम्बर या मोबाइल नम्बर हो तो पोस्ट कार्ड पर या फोन के जरिये अपने खरीदारी नम्बर का हवाला देकर अवश्य भेज दें ताकि जरूरत पड़ने पर उनसे सम्पर्क किय जा सके। 5- मनी आर्डर या हमारे प्रतिनिधियों के माध यम से पत्रिका के सदस्य बनने वालों को यह सूचित किया जाता है कि रसीद कटवाने के बाद दूसरे महीने ही में पत्रिका भेजी जायेगी। 6- किसी भी तरह की शिकायत के लिये इस नम्बर पर संपर्क करें। 7. नए और पुराने सदस्यों से अुनरोध है कि नक़द पैसा कोरियर और जनरल डाक से न भेजें। इसलाहे समाज के बारे में किसी भी तरह की शिकायत के लिये 3 बजे से 5 बजे तक फून करें। 011-23273407

पैग़म्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की शिक्षाएं एवं उपदेश

नवास बिन समआन रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः नेकी अच्छी आदत है और गुनाह वह है जो तुम्हारे दिल में खटके और लोगों को इस गुनाह की खबर होना तुम्हें नापसन्द हो। (मुस्लिम २५५३)

नवास बिन समआन रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः क्यामत के दिन कुरआन, उसके पढ़ने वाले और उस पर अमल करने वालों को लाया जायेगा उस वक्त सूरे बकरा और आले इमरान उस के आगे आगे होगी। (मुस्लिम ८०५)

मअ्क़िल बिन यसार रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः फितनों के जमाने में इबादत करना मेरी तरफ हिजरत के समान है। (मुस्लिम २६४८)

अबू बकरा रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब दो मुसलमान अपनी तलवारों को लेकर आमने सामने मुकाबले पर आ जायें तो दोनों जहन्नमी हैं पूछा गया कि यह तो कातिल था और मकतूल ने क्या किया? फरमाया कि मकतूल भी अपने मुकाबिल को कत्ल करने का इरादा किये हुये था। (बुखारी ७०८३ मुस्लिम २८८८)

अबू सईद खुदरी रजिअल्लाहो अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः मेरे असहाब को गाली मत दो अगर कोई शख्स उहद पहाड़ के बराबर सोना भी खर्च कर डाले तो उनके एक मद गल्ला के बराबर भी नहीं पहुंच सकता और न उनके आधे मद के बराबर। (मुस्लिम ३६३७ मुस्लिम २५४१)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया मेरा हौज़ एक महीने की दूरी के बराबर होगा उसका पानी दूध से भी ज़्यादा सफेद होगा और उसकी खुश्बू मुश्क से भी ज्यादा अच्छी होगी और उसका प्याला (कूज़ा) आस्मान के सितारों की तरह होगा जो एक बार उससे पी ले गा कभी प्यासा नहीं होगा (बुखारी २२६२ मुस्लिम ६५७६)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने किसी जिम्मी को नाहक़ कत्ल किया वह जन्नत की खुश्बू भी नहीं पा सकेगा हालां कि जन्नत की खुश्बू चालीस साल की दूरी से सूंघी जा सकती है। (बुखारी ३१६६)

अब्दुल्लाह बिन अम्र बिन आस रजिअल्लाहो अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः वह शख्स कामयाब हो गया जो इस्लाम लाया और उसको प्रयाप्त रोज़ी दे दी गयी और उसको अल्लाह ने जितना दिया

उस पर कनाअत (संतोष) किया। (मुस्लिम १०५४)

जाबिर बिन अब्दुल्लाह रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जब तुम में से कोई जुमा के दिन आये और इमाम खुतबा दे रहा हो तो वह दो रकअत नमाज़ पढ़े। (बुखारी ११७० मुस्लिम ८७५)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जिसने हमारी तरह नमाज़ पढ़ी और हमारी ही तरह किबला की तरफ मुंह किया और हमारे जबीहा को खाया तो वह मुसलमान है जिसके लिये अल्लाह और उसके रसूल की पनाह है तो तुम अल्लाह और उसके रसूल की दी हुयी पनाह से ख्यानत न करो। (बुखारी ३९१)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः तुम ऐसा अमल करते हो जो तुम्हारी नज़र में बाल से ज्याादा बारीक है तुम उसे मामूली समझते हो (बड़ा गुनाह नहीं समझते) और हम लोग नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम के जमाने में इन कामों को हलाक कर देने वाला समझते थे। (बुखारी ६४९२)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः बेशक काफिर जब दुनिया में कोई नेक काम करता है तो नेकी के बदले में उसको खाना खिलाया जाता है और जब मोमिन दुनिया में कोई नेक काम करता है तो अल्लाह तआला उसकी नेकियों को आखिरत के लिये जमा कर लेता है और उसकी फरमाबरदारी की वजह से तुरन्त उसको दुनिया में रोजी मिलती है (मुस्लिम २८०८)

इब्ने अब्बास रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जो शख्स अपने अमीर में कोई बात नापसन्द करे तो सब्र करे अगर कोई उसकी एताअत से बालिश्त बराबर भी बाहर निकला तो उसकी मौत जाहिलियत की मौत होगी। (बुखारी १८४९ मुस्लिम ७०५३)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः गैब की पांच कुंजियां हैं जिन्हें केवल अल्लाह ही जानता है मां के पेट में क्या है केवल अल्लाह जानता है, आने वाले कल में क्या होगा केवल अल्लाह ही जानता है बारिश कब होगी केवल अल्लाह जानता है किसी की मौत किस जगह होगी अल्लाह के सिवा कोई नहीं जानता है और क्यामत कब काइम होगी सिर्फ अल्लाह जानता है। (बुखारी ७३७९)

अब्दुल्लाह बिन उमर रज़िअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मेरे कन्धे को पकड़ा और फरमायाः तुम इस दुनिया में अजनबी या मुसाफिर की तरह रहो। (बुखारी ६४१६)

अब्दुल्लाह बिन उमर रजिअल्लाहो तआला अन्हुमा बयान करते हैं कि अल्लाह के रसूल सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः जितना मैं जानता हूं अगर लोगों को भी अकेले सफर की बुराइयों के बारे में इल्म होता तो कोई सवार

रात में अकेला सफर नहीं करता। (बुखारी २६६८)

अनस बिन मालिक रज़िअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि कुछ बच्चों के पास से उनका गुज़र हुआ तो उन्होंने उन बच्चों को सलाम किया और फरमाया नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम भी ऐसे सलाम करते थे (बुखारी २१६८ मुस्लिम ६२४७)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी सल्लाहो अलैहि वसल्लम अधिकतर यह दुआ पढ़ते थे ''ऐ अल्लाह हमें दुनिया में भलाई दे और आखिरत में भलाई दे और जहन्नम की आग से बचा'' (बुखारी ६३८६ मुस्लिम ६६०)

अनस बिन मालिक रजिअल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि नबी करीम सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के साथ सफर करते थे तो रोज़ा रखने वाला रोज़ा न रखने वाले को बुरा नहीं समझता था और रोज़ा न रखने वाला रोजेदार को बुरा नहीं समझता था। (बुखारी १११८, मुस्लिम १६४७)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम सोने के लिये अपने बिस्तर पर जाते तो अपने दोनों हथेलियों पर कुल हुवल्लाहो अहद और सूरे मऊज़तैन पढ़कर दम करते फिर दोनों हाथों को अपने चेहरे पर और जिस्म के जिस हिस्से तक हाथ पहुंच जाता उस पर फेरते आप इस तरह तीन बार करते थे। (बुखारी ५७४८ मुस्लिम ५०१८)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः अल्लाह तआला उन औरतों पर रहम करे जिन्होंने पहले हिजरत की थी जब अल्लाह ने यह आयत ''और अपने दुपटटे अपने सीनों पर डाले रहा करें'' नाज़िल की तो अंसार औरतों ने अपने तहबन्दों को दोनों किनारों से फाड़ कर उन की ओढ़नियां बना लीं। (बुखारी ४७५६)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम जब बारिश होती तो यह दुआ करते ''ऐ अल्लाह नफा पहुंचाने वाली बारिश बरसा''। (बुखारी १०३२)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से पूछा कि मेरे दो पड़ोसी हैं मैं उन दोनों में से किस को हदया दूं आपने फरमायाः उन दोनों में से जिसका दरवाज़ा तुम्हारे दरवाज़े से करीब हो। (बुखारी २२५६)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम हदया कुबूल करते थे और इस पर दुआ भी देते थे। (बुखारी २५८५)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि जब आंध ाी चलती तो नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम कहते ''अल्लाहुम्मा इन्नी असअलुका खैरहा व खैरा मा फीहा व खैरा मा उर सिलत बिही व अ जू बिका मिन शर रिहा व शर्रे-मा फीहा व शर्रे-मा उर सिलत बिहि'' (मुस्लिम८६६)

आइशा रजिअल्लाहो तआला अन्हा बयान करती हैं कि नबी सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमायाः रिश्ता नाता अर्श से लटका हुआ है वह कहता है जो मुझे जोड़ेगा अल्लाह उसको जोड़ेगा और जो मुझे तोड़ेगा उसको अल्लाह भी तोड़ेगा। (बुखारी ५६८६ मुस्लिम २५५५)

एमानत की हिफाज़त

मौलाना अब्दुर्रऊफ रहमानी झण्डानगरी रह०

जब हज़रत अबू बक्र खलीफा हुए तो उनकी तिजारत बन्द हो गई और सरकारी खज़ाने (बैतुलमान) से गुज़र बसर के लिये ढाई हज़ार दिरहम निर्धारित किया गया इसी पर आप का गुज़ारा होता था। एक रोज़ खलीफा अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की बीवी ने कहा कि कुछ मीठा खाने को जी चाहता है इस पर खलीफा अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा कि मुझे बैतुल माल से जो कुछ भी मिलता है उससे ज़्यादा नहीं ले सकता। आप की बीवी ने रोज़ाना के राशन से एक एक चुटकी को बचा कर खलीफा के सामने पेश करते हुए कहा कि इसी बचाए हुए राशन से घी शकर मंगा लें तो हलवा तैयार हो जाएगा। खलीफा ने अपनी बीवी से पूछा कि रोज़ाना कितना बचा लेती हो बीवी ने कुछ मात्रा का नाम लिया। खलीफा हज़रत अबू बक्र रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने बीवी के ज़रिये बचाए गये राशन (आटे) को बैतुल माल में जमा करवा दिया और बैतुल माल के इनचार्ज से कहा कि यह राशन हमारी रोज़ी से फालतू है इसको बैतुल माल में जमा कर लो और अगले महीने से इतना वजीफा कम कर दिया जाए क्योंकि बगैर मीठा खाए हुए भी ज़िन्दगी बसर हो सकती है (अश्हरो मशाहीरिल इस्लाम भाग १ पृष्ठ ६३)

बैतुल माल की चीज़ों में सावध ाानी और एमानतदारी की एक मिसाल हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो की जिन्दगी से मिलती है।

एक बार हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो के पास बहरैन से कुछ मुश्क आया आप ने फरमाया कि वज़न करने के बाद इसको बांटना बहुत ज़रूरी है आप की बीवी आतिका ने कहा कि मैं वज़न कर दूंगी हज़रत उमर रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा कि मैं तुम से वज़न नहीं करा सकता क्योंकि वज़न करते वक़्त मुश्क का हिस्सा जब तुम्हारे हाथ में लग जाए गा तो तुम इसको अपने गर्दन वगैरह पर हाथ से मलो गी तो इस तरह से मुश्क तुम्हारे हिस्से में ज़्यादा आ जाएगा। (एहयाउल उलूम, लेखकः गजाली रह०)

मक्का मुकर्रमा में यूसुफ नाम के एक व्यक्ति रहते थे, वह अपना किस्सा बयान करते हैं कि एक आदमी मुझ से एक हज़ार दिरहम उधार ले गया जिसके मिलने की उम्मीद न थी, संयोग ऐसा हुआ कि उसी आदमी की एमानत मुझे दूसरे आदमी से मिली मैं ने एरादा किया कि उसकी रक्म से मैं अपनी दी हुई रकम यानी कर्ज को काट लूं मैंने इस मामला का उल्लेख एक कुरैशी से किया कि अमुक व्यक्ति की जो रकम उसके जिम्मे थी मैं उसी रक़म से काटना चाहता हूं। कुरैशी ने कहा कि अल्लाह के रसूल (पैगम्बर) मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया है कि जिस ने कोई अमानत तुम्हारे हवाले की तो उसकी एमानत को अदा करो और जिसने तुम्हारे साथ ख्यानत की है बदले के तौर पर ख्यानत न करो। (मुसनद अहमद भाग ३ पृष्ठ ४१४)

मामलात में एमानतदारी यह

भी है कि अगर कोई शख्स किसी सिलसिले में सलाह मांगे तो बिना सोचे समझे मश्वरा नहीं देना चाहिए और स्वार्थ में अपने मकसद और फायदे के लिये मश्वरा न दे बल्कि ऐसा मश्वरा दे जो मश्वरा लेने वाले के हक़ में बेहतर हो। इस सिलसिले में चन्द वाक्आत पेश किये जा रहे हैं। एक बार पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पास हज़रत फातिमा बिन्ते कैस मश्वरे के लिये आईं और उन्होंने कहा कि मुझ से दो लोग शादी करने के इच्छुक हैं एक अबू जहम और दूसरे मुआविया रज़ियल्लाहो अन्हुम। पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि अबू जहम तो इसलिये उचित नहीं हैं कि वह बहुत मारते हैं और मुआविया तंगदस्त हैं इसलिए तुम्हारा गुज़र बसर ठीक ढंग से नहीं होगा। इसी हदीस में है कि आप सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने तीसरे शख्स उसामा बिन जैद से शादी का मश्वरा दिया। हज़रत फातिमा फरमाती हैं कि अल्लाह ने इस शादी में बड़ी बर्कत रख दी। (मुसनद अहमद भाग ६ पृष्ठ ४१२)

मुसैइब बिन नखबा बयान करते हैं कि हज़रत हसन व हुसैन और अब्दुल्लाह बिन जाफर रजियल्लाहो अन्हुम मेरी बेटी से शादी करने के एरादे से मेरे घर आए मैंने इन सबको अपने घर में ठेहरा दिया और हज़रत अली के पास मश्वरे के लिये गया और इन तीनों के ख्याल से अवगत कराया हज़रत अली ने अब्दुल्लाह बिन जाफर से शादी करने का मश्वरा दिया। हज़रत हसन व हुसैन रज़ियल्लाहो अन्हुम ने घर आकर अपने पिता हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो से कहा कि आप ने हम दोनों को नापसन्द करके दूसरे से शादी करा दी। हज़रत अली रज़ियल्लाहो तआला अन्हो ने कहा कि जब मुसैइब मेरे पास मश्वरा लेने के लिये आए तो मेरे ऊपर ज़रूरी हो गया था कि मैं उन्हें ईमानदारी से मश्वरा दूं क्योंकि पैगम्बर हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया कि जिससे मश्वरा मांगा जाए उसको एमानतदार होना चाहिए।

न्यायधीश शुरैह के लड़के का किसी लड़के से झगड़ा हो गया उन्होंने अपने जज पिता शुरैह के पास आकर कहा कि ऐसा ऐसा मामला है आप मुझे कानूनी सलाह दें कि अगर फैसला मेरे हक़ में आ जाए तो मैं उस पर मुकदमा कर दूं और अगर फैसला मेरे खिलाफ जाए तो मुकदमा करने का ख्याल अपने दिल से निकाल दूं। न्यायधीश बाप ने बात सुनकर मुकदमा करने की इजाज़त दे दी। लेकिन मुकदमें की सुनवाई के बाद जज ने फैसला अपने लड़के के खिलाफ दिया। जब जज शुरैह घर आए तो उनके लड़के ने कहा कि आप ने मुझे अपमानित कर दिया। लड़के के जज पिता ने कहा कि अल्लाह की कसम जिसके हक में मैंने फैसला दिया है वह लोग मुझे तुझ से ज़्यादा प्रिय नहीं हैं इन जैसे लोगों से अगर पूरी दुनिया भर जाए तो उन सब के मुकाबले में तेरी मुहब्बत मेरे दिल में सब से ज़्यादा है लेकिन अल्लाह मुझे तुझ से ज्यादा प्रिय है। बेटे ने कहा कि आप ने मुझे पहले क्यों नहीं बताया कि फैसला मेरे खिलाफ जाएगा। जज पिता ने अपने बैटे से कहा कि मुझे यह आशंका लगा कि अगर फैसले की खबर तुझे पहले कर देता हूं तो कहीं ऐसा न हो कि तू उनके पास जा कर कुछ समझौता कर ले और उनके बाज अधिकार को समझौते के जरिए अपने लिये हासिल कर ले।

❑ ❑ ❑

धर्म के मामले में कोई ज़ोर ज़बरदस्ती नहीं

डा० अबुल हयात अशरफ

इस्लाम हमें सिखाता है कि लोगों के सामने इस्लाम के सिद्धांत और आस्था को पेश कर दिया जाये और उनसे स्वीकार करने का अनुरोध किया जाये अगर वह इसे स्वीकार कर लेते हैं तो ऐसे लोग तमाम मुसलमानों के भाई बन जाते हैं। अगर वह इन्कार कर देते हैं और इस्लामी आस्था और ईमान लाने वालों के साथ दुश्मनी नहीं रखते तो उन्हें अधिकार है कि वह अपने तरीके पर काइम रहें अगर्चे इसके बाद भी उनकी हिदायत की आशा बाकी रहती है।

दीन की तरफ बुलाने की इमारत हमेशा आजादाना अधि ाकार पर खड़ी की जाती है जिस में जोर जबरदस्ती का कोई दखल नहीं है। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''ऐ नबी! नसीहत किये जाओ तुम केवल नसीहत करने वाले हो कुछ भी इन पर जबरदस्ती करने वाले नहीं हो'' (सूरे गाशियह २१-२३)

''ऐ नबी जो बातें यह लोग बना रहे हैं हम उन्हें खूब जानते हैं और तुम्हारा काम उनसे जबरदस्ती मनवाना नहीं है पस तुम इस कुरआन के जरिये से हर उस शख्स को नसीहत कर दो जो मेरी तंबीह से डरे''। (सूरे काफ-४५)

इस्लामी हुकूमत में धर्म की आज़ादी और अन्य धर्म के मानने वाले शख्स की सुरक्षा का पूरा ख्याल रखा गया है उसकी देख रेख और सुख चैन के लिये हर मुसलमान जवाबदेह है जब कि उसने न तो कलिमए तौहीद का इकरार किया और न मुहम्मद स०अ०व० की पैगम्बरी की पुष्टि की। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता हैः

''दीन के मामले में कोई जबरदस्ती नहीं है, सही बात, गलत ख्यालात से अलग छांट कर रख दी गयी है अब जो कोई तागूत का इन्कार करके अल्लाह पर ईमान ले आया उसने एक ऐसा मजबूत सहारा थाम लिया जो कभी टूटने वाला नहीं और अल्लाह (जिस का सहारा उसने लिया है) सब कुछ सुनने और जानने वाला है।

आरोप लगाया जाता है कि इस्लाम तलवार के जोर से फैला इस में गैर मुस्लिमों के लिये उदारता की शिक्षा नहीं है बल्कि नफरत की शिक्षा है जबकि इस्लाम किसी इन्सान या किसी विशेष वर्ग का बनाया हुआ दीन नहीं है कि इसमें केवल अपने ही समुदाय और वर्ग के लिये भलाई और इन्साफ की बात कही गयी हो। यह उस अल्लाह का दीन है जो सब का खालिक और मालिक है भला वह अपने मानने वालों को ऐसी शिक्षा कैसे दे सकता है जो उसकी दूसरी सृष्टि के लिये रहमत न हो। इस्लाम की शिक्षाएं पूरे

संसार के लिये रहमत हैं यहां तक कि उसके दुश्मन भी उससे लाभान्वित होते हैं इस्लाम पर यह एक अत्यंत दुष्टपूर्ण आरोप है कि वह केवल मुसलमानों के साथ इन्साफ और उदारता करता है और दूसरों के साथ अत्याचार जबदस्ती को रवा रखता है।

तलवार से देश और मैदान जीते जा सकते हैं मगर दिल नहीं जीते जा सकते अगर इस्लाम तलवार से फैला होता तो तलवार का खतरा टलते ही लोग इस्लाम से मुंह फेर लेते। जब ताकत मुसलमानों के हाथ से छीन ली गयी तब भी हजारों लोग इस्लाम कुबूल करते रहे। राजेन्द्र नारायण लाल लिखते हैं कि दुनिया के तमाम धर्मों में इस्लाम की एक खूबी यह भी है उस के खिलाफ जितना गलत प्रोपैगण्डा किया गया वह उतना ही फैलता गया यह इस्लाम के सच्चा और अल्लाह का दीन होने का सुबूत है। पंडित हजारी प्रसाद द्वेदी और रामधारी सिंह दिनकर जैसे दर्जनों हिन्दू इतिहासकारों ने अपनी किताब में इस हकीकत का स्वीकार किया है कि अगर अत्याचार और हिंसा से धर्म फैलाने का काम मुस्लिम शासकों ने किया होता तो सात सौ साल में या तो एक भी हिन्दू बाकी न बचता या फिर इतनी लम्बी मुददत तक उनकी हुकूमत काइम नहीं हो सकती थी।

इस्लाम पर तलवार के जोर से फैलने का आरोप लगाने वाले इस इतिहासिक हकीकत से अवगत होंगे कि अरब मुसलमानों पर विजयी प्राप्त करने वाले तातारियों ने विजय के बाद प्राजित अरबों का धर्म इस्लाम खुद ही कुबूल कर लिया यह कैसे हो गया? तलवार की ताकत तो विजय प्राप्त करने वालों के पास थी वह इस्लाम से प्राजित कैसे हो गये?

इस्लाम पर तलवार के जोर से फैलने का आरोप लगाने वाले इस इतिहासिक हकीकत से अवगत होंगे कि अरब मुसलमानों पर विजयी प्राप्त करने वाले तातारियों ने विजय के बाद प्राजित अरबों का धर्म इस्लाम खुद ही कुबूल कर लिया यह कैसे हो गया? तलवार की ताकत तो विजय प्राप्त करने वालों के पास थी वह इस्लाम से प्राजित कैसे हो गये? मंगोलों की बर्बरता का अंत इस्लाम के अलावा किसी दीन के पास नहीं था पूरी दुनिया मंगोलो की बर्बरता और अत्याचार से काँपती थी उन्हें सभ्यता का पाठ पढ़ाकर इन्सान बनाने का सेहरा इस्लाम के सर है इतने स्पष्ट तर्कों (दलीलों) के बावजूद इस्लाम पर जबरदस्ती धर्म परिवर्तन का आरोप लगाया जाता है या आर्थिक लाभ के बदले धर्म परिवर्तन का आरोप थोपा जाता है कितने अफसोस और दुख की बात है।

नोटः-लेखक विभिन्न समुदायों और उनके शासन काल के बारे में गहन अध्ययन रखते हैं इस लेख का उनकी किताब ''दुआत के लिये मनसूबा साजी और वक्त की अहमियत हिन्दुस्तान के तनाजुर में'' से अनुवाद किया गया है।

वक़्त एक महान नेमत

मौलाना खुर्शीद आलम मदनी

वक़्त तीन अक्षरों का संग्रह है लेकिन यह बड़े काम की चीज़ है यह अल्लाह की बहुत बड़ी नेमत है, कौमों के पतन एवं उत्थान में वक़्त का महत्वपूर्ण रोल रहा है जो कौमें वक़्त की कदर करती हैं अपने को वक़्त का पाबन्द बनाती हैं वह ऊंचाईयों पर पहुंच जाती हैं और जंगलों को गुलशन में परिवर्तित कर देती हैं और सफलता उनका स्वागत करती है और जो कौमें वक़्त को बर्बाद करती हैं तो वक़्त भी उन्हें बर्बाद कर देता है। इस हकीकत से इन्कार नहीं किया जा सकता कि अगर आप वक़्त की कदर करेंगे तो वक़्त भी आप की क़दर करेगा।

इमाम इब्ने क़ैइम रह० वक़्त के बारे में फरमाते हैं कि वक़्त को बर्बाद करना मौत से भी ज़्यादा सख्त है क्योंकि वक़्त को बर्बाद करना इन्सान को अल्लाह और जन्नत से काट देता है जबकि मौत इन्सान को दुनिया और दुनिया वालों से काट देती है। यही वजह है कि कुरआन व हदीस में वक़्त की अहमियत को विभिन्न अन्दाज से उजागर किया गया है।

कुरआन में अल्लाह तआला ने जमाने, वक़्त दिन रात और सुबह व शाम की क़सम खाई है। क़सम खाने का मकसद यह है कि इन्सान वक़्त से फायदा उठाये।

इस्लाम ने इबादत को वक़्त के साथ खास कर दिया है और इसी विशेष समय में इबादत को अदा करने का हुक्म दिया है मिसाल के तौर पर फर्ज़ नमाज़ को वक़्त पर अदा करने का हुक्म है न वक़्त से पहले न वक़्त गुज़रने के बाद। कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमाया है ''निसन्देह नमाज़ मोमिनों पर निर्धारित समय पर फर्ज़ है''। (सूरे निसा १०३)

हज़रत अबू ज़र ग़िफ़ारी रज़ियल्लाहो तआला अन्हो बयान करते हैं कि पैगम्बर मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने फरमाया नमाज़ को उसके वक़्त पर अदा करो (सहीह मुस्लिम)

इसी तरह रोज़ा भी एक खास महीने में फर्ज है और उसकी शुरूआत और अंत का संबन्ध भी वक़्त से है जैसा कि सूरे बकरा की आयत न० १८७ में बायन किया गया है।

इसी तरह ज़कात की अदायगी भी एक खास मुददत गुज़र जाने के बाद वाजिब (अनिवार्य) हो जाती है। ऐसे ही हज का समय भी तय है।

अल्लाह की पूरी सृष्टि और संसार की पूरी व्यवस्था वक़्त की पाबन्द है जैसा कि कुरआन में अल्लाह तआला ने फरमायाः

''क्या आप नहीं देखते कि अल्लाह तआला रात को दिन में और दिन को रात में दाखिल करता है और सूरज चांद को किस ने मुसख्खर कर रखा है सब एक तय समय तक चलते रहते हैं'' (सूरे लुक्मान -२९)

इन्सान का शरीर भी वक़्त का

पाबन्द है ऐसा कभी नहीं होता कि किसी पर पहले बुढ़ापा फिर जवानी और फिर बचपन का ज़माना आता हो।

क्यामत (महापरलय) के दिन हर इन्सान से जो प्रश्न किये जाएं गे उनमें से दो का संबन्ध वक़्त से है एक आयु के बारे में कि आयु को कहां गुज़ारा और दूसरा सवाल जवानी के बारे में हो गा कि उसने जवानी को किन कामों में लगाया। (बुखारी)

भूतपूर्व या गुज़रे हुए दिनों में मुसलमानों ने जो आश्चर्य जनक तरक्की की और हर मैदान में एक महत्वपूर्ण स्थान हासिल किया उसमें भी वक़्त की कदर का सबसे अहम रोल रहा है। इमाम फखरूददीन राजी रह० की किताबों की तादाद १०० से कम न हो गी सिर्फ उन की तफसीर तीस भागों में है। वह कहा करते थे कि खाने पीने में जो वक़्त लगता है मैं हमेशा इस पर अफसोस करता हूं। लेकिन जब मुसलमान वक़्त को बर्बाद करने लगे तो पतन उनका मुकददर बन गया।

आज पाश्चात्य संसार विकास के जिस स्थान पर है और साइंस की तरक़्की का जो सफर तय किया है और ज्ञान में जो उत्थान किया है इस की सबसे बड़ी वजह यह है कि लाख कमियों के बावजूद वेस्टर्न समाज वक़्त की कदर करता है।

आज पाश्चात्य संसार विकास के जिस स्थान पर है और साइंस की तरक़्की का जो सफर तय किया है और ज्ञान में जो उत्थान किया है इस की सबसे बड़ी वजह यह है कि लाख कमियों के बावजूद वेस्टर्न समाज वक़्त की कदर करता है। और ज्ञान की तलाश के लिए अपने अन्दर अथाह लगन रखता है।

और ज्ञान की तलाश के लिए अपने अन्दर अथाह लगन रखता है।

लेकिन अफसोस है कि हम ने पाश्चात्य समाज की खामियों को तो अपना लिया लेकिन उनकी अच्छाइयों को अपनाने में ग़ाफ़िल रहे।

इस वक़्त हम वक़्त को बर्बाद करने में सबसे आगे हैं देर रात तक जागना और सुबह देर तक सोते रहना हमारी पहचान बन गई है। हम लोग अपने वक़्त को जिस तरह बर्बाद कर रहे हैं और सोशल मीडिया पर जिस तरह अपने वक्त को बर्बाद कर रहे हैं वह बिल्कुल स्पष्ट है।

यह उस कौम की हालत है जिस के यहां वक़्त की पाबन्दी पर सब से ज़्यादा जोर दिया गया है।

इस लिये ज़रूरी है कि उम्मत के अन्दर वक़्त की कदर करने का जजबा पैदा किया जाए इसके लिये सबसे पहले ज़रूरी यह है कि ओलमा पहले खुद भी वक्त के पाबन्द बनें, तब ही समुदाय की सफलता का सपना साकार हो सकता है वर्ना वक़्त बड़ी तेज़ी से गुज़र जाएगा और यह उम्मत तरक्की की दौड़ में सबसे पीछे रह जाएगी।

अल्लाह हमें वक़्त का सम्मान और कदर करने की क्षमता दे। आमीन

❑ ❑ ❑

अल्लाह हमारे कर्म को जानता है

नौशाद अहमद

आज का इन्सान अपने बहुत से कर्म को छिपाना चाहता है वह चाहता है कि मेरे कुछ कर्म केवल मेरे ही ज्ञान में रहें लेकिन उसका परवरदिगार उसके हर कर्म को जान लेता है चाहे वह दुनिया के किसी भी हिस्से और किसी भी भाग में रहे, उसके एक एक पल की वह खबर रखता है। क्यामत के दिन बन्दा अपने पाप को छिपाने की कोशिश करेगा लेकिन अल्लाह तआला उसके एक एक कर्म को उसके सामने पेश कर देगा। कुरआन में अल्लाह तआला फरमाता है।

''और सब के सब तेरे रब के सामने सफबस्ता हाज़िर किए जाएंगे यक़ीनन तुम हमारे पास उसी तरह आए जिस तरह हमने तुम्हें पहली मरतबा पैदा किया था लेकिन तुम इसी ख्याल में रहे कि हम हरगिज़ तुम्हारे लिये कोई वादे का वक़्त निध ारित नहीं करेंगे और ना-म-ए आमाल (कर्मपत्र) सामने रख दिए जाएंगे पस तू देखे गा कि गुनहगार (पापी) उस (की तहरीर) से भयभीत हो रहे हों गे और कह रहे होंगे हाय हमारी खराबी यह कैसी किताब है जिसने कोई छोटा बड़ा बगैर घेरे बाकी ही नहीं छोड़ा और जो कुछ उन्होंने किया था सब मौजूद पाएंगे और तेरा रब (पालहार) किसी पर जुल्म व सितम नहीं करेगा।'' (सूरे कहफ ४८, ४६)

जब दुनिया में इस तरह की कोई खबर आती है कि बात चीत पर निगरानी हो रही है तो इन्सान संभल जाता है और किसी भी ऐसी बातों से परहेज़ करने लगता है जो उसकी बदनामी का सबब बन जाए और वह कानून की पकड़ में आ जाए। लेकिन अल्लाह ने इन्सान की निगरानी के लिये जो व्यवस्था बना रखी है वह अत्यन्त अभूत पूर्व और अक्ल को हैरान कर देने वाली है। कुरआन में इस तरह की निगरानी का उल्लेख इन शब्दों में किया गया है।

''निसन्देह तुम पर निगेहबान इज़्ज़त वाले लिखने वाले मुकर्रर (तैनात) हैं जो कुछ तुम करते हो वह जानते हैं, यकीनन (निसन्देह) नेक लोग जन्नत के ऐश व आराम और नेमतों में होंगे और निसन्देह बदकार लोग नरक में होंगे''। (सूरे इन्फेतार, १०-१४)

इन आयतों में यह बताया गया है कि जो लोग महा परलय का इन्कार कर रहे हैं वह इस भ्रम में न रहें कि उनका कर्म अल्लाह से गुप्त है बल्कि वह हमारे हर कर्म को नोट कर रहा है, इस काम के लिये अल्लह की तरफ से फरिश्ते तैनात हैं जो इस काम को बड़ी ईमानदारी से अंजाम दे रहे हैं, यह इस बात की चेतावनी है कि हर कर्म से पहले खूब अच्छी तरह से सोच लो कि हर कर्म का फल मिलने वाला है और वहां पर किसी तरह की कोई दलील काम में नहीं आएगी वहां शब्दों का खेल काम नहीं आएगा उस वक़्त केवल अल्लाह के कानून के मुताबिक फैसला होगा, वहां कवेल इन्साफ होगा वहां इन्सान के एक एक कर्म को सच्चाई के तराजू से तौला जाएगा, न किसी की दौलत काम में आएगी

और न ही किसी की शक्ति काम में आएगी और न ही किसी का प्रभाव और एपरोच और किसी को राई को पहाड़ और पहाड़ को राई बनाने का अवसर नहीं मिलेगा जैसा कि आज कल के संसार में हो रहा है। संसार में निजिता का चाहे जितना संरक्षण कर लिया जाए, चाहे जितना लोगों के पापों को छिपा लिया जाए लेकिन उस दिन सब का पाप और पुण्य दूध और पानी की तरह अलग कर दिया जाएगा।

क्यामत के दिन जो दृश्य हो गा उसका चित्रण कुरआन में इस प्रकार किया गया है।

''जब जमीन पूरी तरह से झिंझोड़ दी जाएगी और अपने बोझ बाहर निकाल फैंकेगी। इन्सान कहने लगेगा कि उसे क्या हो गया? उस दिन ज़मीन अपनी सब खबरें बयान कर देगी। इसलिये कि तेरे रब ने उसे हुक्म दिया हो गा। उस रोज़ लोग विभिन्न (मुख्तलिफ) जमाअतें होकर (वापस) लौटेंगे ताकि उन्हें उनके आमाल दिखा दिए जाएं। पस जिसने ज़र्रा बराबर नेकी की होगी वह उसे देख लेगा और जिसने ज़र्रा बराबर बुराई की होगी वह उसे देख लेगा।'' (सूरे जिलज़ाल १-८)

क्यामत के दिन इन्सान से पांच चीज़ों के बारे में प्रश्न होगा इन्सान से उसके आयु के बारे में सवाल होगा कि उसने अपने आयु को कहां खपाया, उसकी जवानी के बारे में पूछा गछ होगी कि उसने अपनी जवानी को किन कामों में लगाया, माल के बारे में सवाल होगा कि माल कहां कहां से कमाया और माल को कहां खर्च किया उसके इल्म के बारे में सवाल होगा कि उसने जो ज्ञान प्राप्त किया था उस पर किस हद तक और कितना अमल किया।

आज साइंस और टेकनालोजी ने इतनी तरक्की कर ली है कि कौन आदमी कहां है और क्या कर रहा है उसको दूर से देखा जा सकता है और यह इन्सान का बनाया हुआ सामान है। एक खबर पल भर में दुनिया के एक कोने से दूसरे कोने तक पहुंच जाती है अल्लाह तो पूरी दुनिया का असली स्वामी है वही इस दुनिया को चला रहा है, वह दुनिया की हर गति को बिना किसी कमी के जानता है, उससे कोई भी चीज़ छिपी नहीं रह सकती, दुनिया की मशीन वक़्ती तौर पर खराब और काम करना बन्द कर देती है और उसका डेटा भी डीलीट हो जाता है लेकिन अल्लाह का बनाया हुआ सिस्टम न तो खराब हो सकता है और न ही उसका जमा किया हुआ डेटा डिलीट हो सकता है। इसलिये हर इन्सान को वही कर्म करना चाहिए जो उसके लिये दुनिया में लाभकारी होने के साथ साथ मरने के बाद वाले जीवन में लाभकारी हो, कोई ऐसा काम न कर जो उसके अपमान का कारण बन जाए, इसी तरह किसी शक्ति शाली व्यक्ति को ताक़त के नशे में चूर हो कर कोई ऐसा काम नहीं करना चाहिए जो बाद में उसके लिये पछतावे का सबब बन जाए क्योंकि अल्लाह ही सर्वशक्तिमान है उसकी कुदरत के सामने इन्सान बेबस है, इसलिए हम सभी को ऐसा कार्य करना चाहिए जो अल्लाह के यहां सामीप्ता का माध यम बने और हर इन्सान के दिमाग में यह बात रहे कि वह जो कुछ कर रहा है अल्लाह उसे देख रहा है और मरने के बाद उसके एक एक कर्म का हिसाब लेगा और इसी आध ाार पर उसकी कामयाबी और नाकामी का फैसला होगा।